P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

नेपाल की उच्च शिक्षा की स्थिति का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

कृष्ण चन्द्र गौड़
अध्यक्ष,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
डी.पी.बी.एस. पी.जी. कॉलेज
अनूपशहर, बुलन्दशहर
उ0प्र0, भारत

सारांश

विभिन्न देशों के उच्च शिक्षा का इतिहास यह बतलाता है कि उच्च शिक्षा संस्थाऐं देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनयिक परिवेश के अनुसार अपने में परिवर्तन लाती है। फिर भी वासर (1980) के अनुसार 80 के दशक में हुए परिवर्तन पिछले परिवर्तनों की अपेक्षा भिन्न प्रकार के हैं जिसमें गुणात्मक परिवर्तन बहुत तेजी से हुआ है। फिर भी कुछ विचारकों का मानना है कि "साठ के दशक के बाद उच्च शिक्षा के आध्यात्मिक विस्तार होने के कारण सभी उच्च शिक्षा संस्थाओं में गुणात्मक परिवर्तन नहीं हो पाये हैं।"

मुख्य शब्द : त्रिभुवन, विश्व–विद्यालय, काठमाण्डू, दाड0, जनाकांक्षा, व्यावसायिक।

प्रस्तावना

हिमालय विश्व की सर्वोच्च श्रृंखला है। यह एशिया महाद्वीप के सर्वोत्तम विशाल भारतवर्ष का शिरोमुकुट है। इस पर्वतमाला की गोद में अतिप्राचीन काल से उदीयमान नेपाल देश अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं को जीवित रखते हुए आज भी विश्व का ध्यान आकृष्ट कर रहा है।

शोध का उद्देश्य

शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. नेपाल की उच्च शिक्षा की स्थिति का सर्वेक्षण।
2. उच्च शिक्षा एवं रोजगार के सम्बन्ध का आँकलन।
3. भारत की उच्च–शिक्षा प्रणाली का नेपाल की उच्च–शिक्षा पर प्रभाव की जानकारी।
4. नेपाल के उच्च शिक्षा को समुन्नत करने के सुझााव।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

किसी भी देश के शैक्षिक स्तर का आँकलन वहाँ की उच्च शिक्षा की व्यवस्था एवं स्तर से ही किया जा सकता है। सन् 1950 के पूर्व नेपाल में उच्च शिक्षा बहुत ही सामान्य रूप में थी। सन् 1956 से नेपाल के शासन ने नेपाल में उच्च शिक्षा को सुव्यवस्थित करने की योजना बनाई। उसी योजना में कतिपय संशोधनों के साथ उच्च शिक्षा का विस्तार किया गया। कालान्तर में संस्कृत विश्वविद्यालय भी खुला। कुछ समीक्षकों के विचार से नेपाल की उच्च–शिक्षा प्रणाली भारत से ली गई है। अभी भी वहाँ की उच्च शिक्षा की व्यवस्था अपना स्वतन्त्र स्थान नहीं बना पायी है। इसके क्या कारण हैं? इसके परिज्ञान होने के पश्चात ही वहाँ की उच्च–शिक्षा की स्थिति में सुधार हो सकता है। इस प्रकार दूसरे देशों की उच्च–शिक्षा स्तर की समकक्षता प्राप्त हो सकती है। इसीलिए इस प्रकार का अध्ययन शैक्षिक दृष्टि से बहुत आवश्यक है तथा उच्च–शिक्षा की भावी योजना के लिए महत्वपूर्ण भी है। इसी दृष्टि से उच्च–शिक्षा की स्थिति के सर्वेक्षण का कार्य प्रस्तुत अध्ययन में रखा गया है।

नेपाल की भौगोलिक स्थिति

विश्व का मानचित्र देखने से हमें स्पष्ट होता है कि नेपाल 80 प्रतिशत और 88 प्रतिशत देशान्तर तथा 26 प्रतिशत और 30 प्रतिशत अक्षांशों के बीच आकार मे छोटा किन्तु गुण गरिमा में विशाल देश है। उसके उत्तर में तिब्बत पूरब में सिक्किम दक्षिण में बिहार तथा उत्तर प्रदेश और पश्चिम में भी उत्तर प्रदेश है। श्री काशी प्रसाद श्रीवास्तव के अनुसार "चीन और भारत के बीच स्थित होने के कारण नेपाल की राजनैतिक महत्ता बहुत बढ़ी है।"[1] नेपाल का क्षेत्रफल लगभग 54000 वर्गमील है। पूरब से पश्चिम तक इसकी लम्बाई 525 मील है और उत्तर से दक्षिण चौड़ाई 90 से 140 मील है।

इससे स्पष्ट है कि 'भारत और चीन जैसे देशों की भौगोलिक स्थितियों की तुलना में यह एक छोटा सा देश है।'[2]

प्राकृतिक विभाग

प्राकृतिक दृष्टि से नेपाल प्रधान तथा तीनों भागों में विभक्त है–

1. उत्तर का पहाड़ी क्षेत्र
2. बीच की पहाड़ी घाटियों का क्षेत्र
3. तराई प्रदेश का क्षेत्र, जहाँ समतल मैदान और घने वन–प्रदेश हैं।

महाकवि कालीदास ने प्राचीन संस्कृत वाङमय के आधार पर पवित्र पर्वतराज हिमालय का सर्वांगपूर्ण वर्णन इस प्रकार किया हैः–

अस्युत्तरस्यां दिषि देवतात्मा,
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोय निधिअवगाह्य,
स्थितः पृथिव्यामिव मानदण्डः।।

अर्थात्– 'हमारे देश की उत्तर दिशा में देवों, ऋषियों और महर्षियों से संवृत पर्वतराज हिमालय विराजमान हैं, जो पूर्वी तथा पश्चिमी महा सागरों का अवगाहन करता हुआ पृथ्वी मण्डल के मानदण्ड के समान प्रतिष्ठित है।'[1]

हिमालय की प्रमुख चोटियों के नाम इस प्रकार हैं–

1. कंचनजंगा
2. अन्नपूर्णा
3. मकाम्
4. लोहात्से
5. गौरी शंकर
6. धौलागिरि
7. औषधि पर्वत

श्री विराट एम.ए. ने ठीक ही लिखा है– "बीस पच्चीस पर्वत शिखरों का सौन्दर्य सारे संसार में बेजोड़ है। इन दृश्यों को देखने के लिए हजारों पर्यटक सहस्र मील से चलकर आते हैं।"[3]

अध्ययन का सीमांकन

जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन सम्पूर्ण नेपाल की उच्च शिक्षण संस्थाओं का समावेश किया जायेगा। इसके अन्तर्गत सामान्य शिक्षा, तकनीकि शिक्षा एवं संस्कृत शिक्षा से सम्बन्धित विद्यालयों, संस्थानों के छात्रों, अध्यापकों, अभिभावकों एवं प्रशासकों के विचार जानने के लिए जहाँ–जहाँ सार्थकता समझी जायेगी, वहाँ अन्य देशों के उच्च–शिक्षा संस्थानों से नेपाल के उच्च–शिक्षा संस्थानों की गति विधियों की तुलना की जायेगी।

साहित्यावलोकन

किसी भी प्रकार के अध्ययन के लिए यह आवश्यक होता है कि उससे सम्बन्धित साहित्य–आँकड़े एवं पूर्व में किये गये शोधों का अध्ययन किया जाय। जैसा कि पूर्व में कहा गया है–"नेपाल की उच्च–शिक्षा का प्रारम्भ अभी थोड़े ही वर्षों से हुआ है। अतएव नेपाल की उच्च शिक्षा पर अभी बहुत अध्ययन नहीं हुए हैं। यह ज्ञातव्य है कि नेपाल की उच्च शिक्षा पर भारतीय उच्च शिक्षा का प्रभाव पड़ा है और यह भारतीय उच्च–शिक्षा का स्रोत ब्रिटेन की उच्च शिक्षा है।" नेपाल के विश्वविद्यालय भी भारतीय विश्वविद्यालय के नमूने के आधार पर स्थापित हुए हैं। शिक्षा–विशेषज्ञों, समाजशास्त्रियों एवं राजनीति शास्त्रवेत्ताओं के अनुसार किसी भी राष्ट्र का निर्माण एक बहुत ही दुरूह एवं परिश्रम साध्य है। राष्ट्र के उच्च वर्ग के लोगों द्वारा निर्माण के सिद्धान्त प्रतिपादित किये जा सकते हैं, किन्तु उस राष्ट्र की अधिकांश जनता परम्परागत होती है। उसको उठाने के लिए बहुत ही सशक्त साधन की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के साधन के उपलब्ध कराने के लिए उस राष्ट्र में जो सुलभ मनुष्य शक्ति है। उसी को गतिशील बनाना पड़ता है। यह तभी सम्भव है जब परम्परागत अज्ञानता एवं गरीबी को दूर करने के लिए युद्ध स्तर पर कार्य किया जाये। इस सम्बन्ध में एक प्रतिवेदन में कहा गया है–

"We should pursue national development programme on a war-footing by organizing and disciplining the country's manpower and make judicious choice between immediate gains and future development as well as between narrow interests and broad national objectives."[4]

उच्च–शिक्षा के सर्वेक्षण के लिए यह आवश्यक समझा गया कि पहले सम्पूर्ण शिक्षा से सम्बन्धित आँकड़ों, उद्देश्यों, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों पर विचार किया जाये।

1960 से लेकर पिछले दो दशकों में नेपाल की शिक्षा की स्थिति इस प्रकार है–

Table No 2.1
Education Development

Number of School				Number of Structure			Number of Teachers		
Education Lable	1951	1961	1970	1951	1961	1970	1951	1961	1970
Primary	321	4001	7256	8505	182'533	449,141	NA	NA	18250
Secondary	11	156	1065	1630	21,	115102704	NA	NA	5407
Higher	2	33	49	250	5143	17,200	NA	NA	1070

Table No 2.2
Student Enrolment

Primary		Secondary	Higher
Percentage of Primary School age children Year age (6-10)		Percentage in terms of Primary Enrolment	Percentage in terms of Secondary Enrolment
1951	0.9	19.0	20.5
1961	15.8	12.0	24.4
1970	32.0	23.0	16.0

नेपाल में किसी विशिष्ट उद्देश्य के शिक्षा के त्वरित विकास ने अनेकों समस्याओं को जन्म दिया। सीमित आर्थिक संसाधनों के उपयोग से शिक्षा का विकास अनुत्पादक और असन्तोषजनक प्रतीत होता है। शैक्षिक गतिविधियों की उचित व्यवस्था बहुत दिनों से गतिहीन बनी हुई है। इस क्रम में गति लाने के लिए शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन आवश्यक होगा। यहाँ की शैक्षिक समस्याओं को जानने के लिए गहन निदान की आवश्यकता है। इसी दृष्टिकोण से शिक्षा की समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है–

समस्याएँ

1. शैक्षिक नीतियों एवं उद्देश्यों को उचित रूप से परिभाषित नहीं किया गया।
2. किसको शिक्षित किया जाय, किस स्तर तक शिक्षित किया जाये तथा कैसे शिक्षित किया जाये इस पर अभी तक निर्णय नहीं लिया गया।
3. केवल संख्यात्मक वृद्धि का परिणाम है कि प्राप्त आर्थिक संसाधन पर्याप्त नहीं हो पा रहे हैं और इसने शिक्षा के स्तर को प्रभावित किया है।
4. अनुदान देने का निर्णय अप्रायोगिक एवं अवैज्ञानिक है।

शोध की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्तमान समय के आँकड़े एकत्र करने है तथा नेपाल की शिक्षा के वर्तमान ढाँचे को जानना है एवं शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न स्थितियों एवं गतिविधियों से परिचय प्राप्त करना है। अतः अध्ययन की सुचारूता के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

सर्वेक्षण विधि उस प्रदत्त को एकत्रित करने और विश्लेषण करने की विधि है जो बहुत से ऐसे उत्तर देने वालों के द्वारा संकलित किया जाता है, जो एक सुनिश्चित जनसमुदाय के प्रतिनिधि हैं। यह प्रदत्त बहुत ही अधिक संरचित एवं विस्तृत प्रश्नावली अथवा साक्षात्कार से उपलब्ध किया जाता है। अनुसन्धान की रूचि सामान्यतया उस जनसमुदाय का वर्णन करने में होती है, जिसका वह अध्ययन कर रहा है।

शैक्षिक समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक व्यापक रूप से प्रयुक्त किये जाने वाले विधियों में से एक है। इसका उपयोग शिक्षा के स्थानीय एवं राज्य–स्तर के, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पक्षों का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। इसका कार्य–क्षेत्र दत्तों के संग्रहीकरण एवं सारणीबद्ध करने के अतिरिक्त व्याख्या, तुलना, मापन, वर्गीकरण, मूल्यांकन तथा सामान्यीकरण भी होता है।

जनसंख्या

सर्वेक्षण विधि में यह आवश्यक होता है कि हम किस प्रकार की जनसंख्या के बारे में अध्ययन करने जा रहे हैं। इसलिए जनसंख्या का जानना एवं उसे सीमाबद्ध करना आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन में नेपाल के उच्च शिक्षा के बारे में अध्ययन करने का विचार किया गया है। इसके अन्तर्गत उच्च–शिक्षा का प्रशासन, छात्रों एवं अध्यापकों की स्थिति, परीक्षा–प्रणाली पर विचार किया जायेगा। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में उच्च शिक्षा से सम्बन्धित सभी वर्ग मिलकर जनसंख्या का निर्माण करेंगे। इसके अन्तर्गत शिक्षा का प्रशासक वर्ग, अभिभावक, अध्यापक एवं छात्र रहेंगे, किन्तु एक सीमित अध्ययन में समस्त जनसंख्या के अध्ययन के लिए सभी सदस्यों से सम्पर्क करना सम्भव नहीं है। इसलिए सभी वर्गों से निर्धारित संख्या के न्यादर्शों का चयन किया जायेगा।

न्यादर्श

शिक्षा में किसी विशिष्ट जनसंख्या के विषय में कतिपय प्रश्नों का उत्तर देने के लिए आवश्यक सूचना के निर्धारण की दृष्टि से हाल ही के कुछ वर्षों से न्यादर्श का उपयोग आत्मिक किया जा रहा है। सर्वेक्षण में न्यादर्श विधि के लाभों के विषय में चर्चा करते हुए विलियम जी कोकरन ने लिखा है–विज्ञान की प्रत्येक शाखा में साधनों की इतनी कमी है कि ज्ञान में वृद्धि करने वाले तत्वों के एक अंश मात्र का अध्ययन करना हमारे लिए सम्भव नहीं है।"

प्रस्तुत अध्ययन के लिए न्यादर्शों का चयन

वर्तमान अध्ययन में दो प्रकार के न्यादर्श होंगे–

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों का न्यादर्श
2. प्रशासक, अभिभावक एवं अध्यापकों का न्यादर्श

छात्रों के न्यादर्श का चयन नेपाल के उच्च–शिक्षा के महाविद्यालयों के छात्रों में से किया जायेगा। इसके लिए वे ही कालेज लिए जायेंगे जो सन् 1969 तक नेपाल में कार्य कर रहे थे। इन महाविद्यालयों के अतिरिक्त नेपाल में दो विश्वविद्यालय हैं:–

1. त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमाण्डू
2. महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय दाड0

इन दोनों विश्वविद्यालयों के छात्रों को भी न्यादर्श में सम्मिलित किया जायेगा।

न्यादर्श चयन की प्रक्रिया

विशेषज्ञों के विचारोपरान्त यह निर्णय लिया गया कि छात्रों के न्यादर्श का आकार 400 का होगा। निम्नलिखित तालिका से विभिन्न वर्गों के न्यादर्श का आकार से स्पष्ट होता है।

तालिका–3.1

क्रमांक	वर्ग	न्यादर्श का आकार
1	छात्र	400
2	अध्यापक	100
3	अभिभावक	50
4	प्रशासक एवं राजनीतिज्ञ	50

तालिका–3.2
त्रिभुवन विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कालेजों की सूची

क्रमांक	कालेज	स्थापित वर्ष	1968–69 इनरोलमेन्ट
	काठमाण्डू वैली		
1	त्रिभुवन यूनिवर्सिटी कालेज	1959	561
2	त्रिचन्द कालेज	1918	2564
3	पद्म कन्या कालेज	1951	540
4	नेपाल नेशनल कालेज	1951	830
5	वाल्मीकि संस्कृत महाविद्यालय	1948	158
6	कालेज ऑफ एजुकेशन	1956	331
7	ललित कला महाविद्यालय	1967	17
	केन्दीय नेपाल		
8	श्री ठाकुर राम कालेज, बीरगंज	1952	534
	पूर्वी नेपाल		
9	महेन्द्र कालेज, धारन	1955	661
10	भोजपुर कालेज, भोजपुर	1965	111
	पश्चिम नेपाल		
11	पृथ्वीनारायण कालेज, पोखरा	1960	522
12	एम.बी.बी.एस. कालेज, दाड0	1959	58

सूची देखने से प्रतीत होता है कि ये कालेज चार क्षेत्रों में विभक्त हैः–

1. काठमाण्डू घाटी
2. केन्द्रीय नेपाल
3. पूर्वी नेपाल
4. पश्चिमी नेपाल

यद्यपि क्षेत्रानुसार विद्यालयों की संख्या भिन्न–भिन्न है, फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिए प्रत्येक क्षेत्र में एक विद्यालय को प्रतिनिधि के रूप में लिया गया है। इस प्रकार निम्नलिखित चार विद्यालयों का न्यादर्श बनाया गया।

क्रमांक	क्षेत्र	नाम	छात्र संख्या
1	काठमाण्डू घाटी	त्रिचन्द कालेज	2564
2	केन्द्रीय नेपाल	श्री ठाकुर राम कालेज बीरगंज	534
3	पूर्वी नेपाल	महेन्द्र मोरगंज कालेज विराटनगर	1419
4	पश्चिमी नेपाल	पृथ्वी नारायण कालेज पोखरा	522

Source:- Complied from ministry of Education in Nepal. (Kathmandu, Nepal, November 1970), P.16-33, and other Neepalese Sources.

छात्रों का न्यादर्श

छात्रों के न्यादर्श का आकार सुविधानुसार किया जा सकता था, किन्तु इसकी वैज्ञानिक प्रक्रिया होना वांछनीय समझा गया।

क्रच एण्ड क्रच फील्ड के अनुसार– "न्यादर्श का आकार 500 होना चाहिए। यदि न्यादर्श का आकार 500 से कम होता है तो उसमें त्रुटि समझी जाती है, फिर भी यदि छोटे आकार से भी वांछित परिणाम की प्राप्ति सम्भव है तो कुछ त्रुटि को मानते हुए छोटे आकार का भी न्यादर्श लिया जा सकता है। इस तथ्य को मौली महोदय ने बहुत उपयुक्त ढंग से बतलाया है।

मौली कहता है–

"The answer to the question of the size of the sample that is required is to be found in the margin of error that can be tolerated in the find estimate of the population parameter. Precision in the estimate of the population para-meter requires the application of methods of analysis which will extract maximum information from the data that is obtained. But at the risk of mouotony, if must he refeated that it is a fallacy to expect were sample size to ensure accuracy, Since sample size will not generally eliminate any licas in herent in the sampling or measurement techniques. The latter is the area that needs to be watched carefully."

न्यादर्श के आधार पर निश्चय करने के लिए सामान्य सम्भावित वक्र वितरण पर आधारित कई आवृत्तियों वाले याद्च्छिक न्यादर्शों के मध्य मानों द्वारा होता है।

सामान्य सम्भावित वक्र वितरण की दोनों ओर 1. 96 तथा 2.58 मानक त्रुटियों पर क्रिटिकल बिन्दु होते हैं। जिसके आधार पर निश्चय किया जाता है कि प्रथम की क्रिटिकल त्रुटि 5 प्रतिशत सम्भावना स्तर पर है तथा द्वितीय की मानक त्रुटि 1 प्रतिशत सम्भावना स्तर पर है। यदि हम 95 प्रतिशत एवं 99 प्रतिशत पर सम्भावना त्रुटि को स्वीकार करें तो 400 न्यादर्श के आकार को उचित मान सकते हैं।

इसके लिए निम्नलिखित गणना की प्रक्रिया द्रष्टव्य हैः–

सामान्य वितरण के लिए जिसमें मध्यमान =10

मानक विचलन = 16

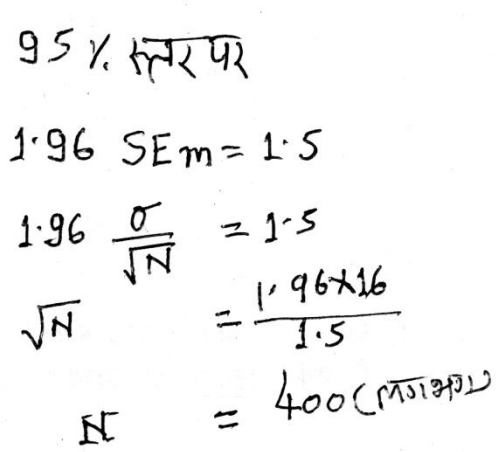

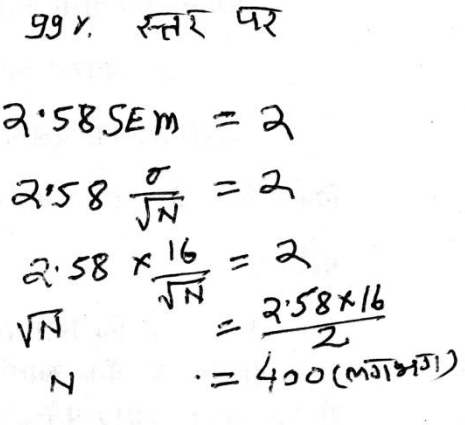

इस प्रकार हम देखते हैं कि 400 का न्यादर्श का आकार को 300 कर दे तो त्रुटि अधिक हो जायेगी। इसीलिए छात्रों के न्यादर्श के लिए 400 का ही आकार रखा गया।

निष्कर्ष

नेपाल बहुत ही छोटा देश है और यह सम्पूर्ण संसार में एक मात्र हिन्दू राष्ट्र है। यहाँ की आबादी लगभग पौने दो करोड़ है। भारत और चीन के मध्य में यह एक बफर स्टेट है। हिन्दू राष्ट्र होने के नाते भारत की सभ्यता एवं संस्कृति का इस देश पर अधिक प्रभाव है। धर्म के रूप में यहाँ पर मुख्य रूप से हिन्दू धर्म के मानने वाले लोग हैं तथा कुछ बौद्ध धर्म के मानने वाले लोग हैं। इसलिए प्राचीनकाल मे वहाँ के धार्मिक निवासी तीर्थ–यात्रा के प्रसंग में काशी, मथुरा, प्रयाग, हरिद्वार, अयोध्या आदि स्थानों पर आते थे तथा यहॉ की सभ्यता एवं संस्कृति के प्रत्यक्षदर्शी होकर अपने देश में भारत की धर्म समन्वित संस्कृति का नेपाल में प्रचार करते थे।

नेपाल में अभी भी अपने किशोरों के लिए मौलिक शिक्षा का अवसर प्रदान करना है। अभी भी बड़ी संख्या में छोटे बच्चे विद्यालय नहीं जाते कारण उनका भौगोलिक दृष्टि से स्कूल से दूर होना अथवा माध्यमिक और उसके ऊपर के शिक्षा स्तरों में चयनित प्रक्रियाओं का होना, अध्यापकों के लिए सुविधाएँ और उनके अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहन की बड़ी कमी है। इसमें सुधार की आवश्यकता है।

अग्रिम शोध हेतु सुझाव

नेपाल जैसे विकासशील देश की उच्च शिक्षा पर किये गये शोध के आधार पर उच्च–शिक्षा सम्बन्धी कतिपय अन्य शोधों के लिए निम्न सुझाव दिये जा रहे हैं–

1. छोटे राष्ट्रों के प्रसंग में शिक्षा का विकेन्द्रीरण।
2. शिक्षा–नीति एवं नेपाल में उच्च–शिक्षा का गुणात्मक एवं संख्यात्मक विकास।
3. नेपाल की उच्च–शिक्षा में वित्तीय प्रबन्धन।
4. नेपाल की शिक्षा में असमानता पर एक दृष्टिपात एवं उसके निराकरण के उपाय।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

जायसवाल सीताराम : तुलनात्मक शिक्षा, हिन्दी समिति, सूचना विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ, 1970

मलैया, के.सी.: तुलनात्मक शिक्षा, लोक भारती प्रकाशन, 1966।

श्रीवास्तव, आर.एस.: तुलनात्मक शिक्षा, इण्डियन बुक हाऊस, हॉस्पीटल रोड आगरा, 1963

चौबे, सरयू प्रसादः भारत में शिक्षा का विकास, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, 1969।

मुखर्जी, श्रीधरनाथ : भारत में शिक्षा, आचार्य बुक डिपो, बड़ौदा, 1960।

जौहरी एवं पाठक : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1969।

सारस्वत, डा0 मालती : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याए, कैलाश प्रकाशन, कल्यानी देवी, इलाहाबाद–3, 1984–85।

पुरोहित, जगदीश नारायण : शिक्षण के लिए आयोजन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 1972

राय, पारसनाथः अनुसन्धान परिचय, लक्ष्मी रोड नारायण अग्रवाल, अस्पताल रोड़, आगरा–3, 1989।

अंत टिप्पणी

1. *नेपाल की कहानी– पृष्ठ–82, श्री काशी प्रसाद श्रीवास्तव*
2. *नेपाल, पृष्ठ–17, विराट (एम.ए)।*
3. *कुमार सम्भव 1–1, महाकवि कालीदास*
4. *वाल्मीकि रामायण 1*
5. *नेपाल पृष्ठ 7–8, विराट (एम.ए)*
6. *Nation Education System, Plan 1971 – 76 Nepal, page-1*
7. *Mouly, Georg,J,1 Elements of Research P.175*
8. *विलियम जी कोचरनः सेम्पलिंग टीचिंग, बाम्बे एशिया पब्लिशिंग हाउस एशियन स्टूडेन्ट्स एडिशन 1959, पृष्ठ 1*